Southern Baptists से मिलें

आप एक Southern Baptist कलीसिया का सदस्य बनकर ही Southern Baptist कहला सकते हैं, और वह भी ऐसी कलीसिया जो संसार को मसीह के लिये जीतने के उच्च उद्देश्य को पूरा करने में सहायक है । आमतौर से कलीसिया का सदस्य बनने का अर्थ है कि यीशु को अपना मुक्तिदाता और परमेश्वर स्वीकार करना और एक विश्वासी के नाम से डुबकी लगाकर बपतिस्मा लेना ।

Southern Baptist के अपने विश्वासों का एक साधारण व्याकरण, "बैपटिस्ट विश्वास और सन्देश" में दिया गया है । यह उन्हें समझने की एक कुंजी है । इसकी कॉपियें Southern Baptist की कलीसियाओं से मिल सकती हैं । नीचे उसका एक पक्षपाती संक्षेप है :

मौलिक विश्वास
पवित्र वचन परमेश्वर के द्वारा प्रेरित पुरूषों ने लिखा था और वह परमेश्वर का मानव पर स्वंय को प्रकट करने का साधन है । वह दिव्य निर्देश का सम्पूर्ण खज़ाना है । इसका लेखक परमेश्वर है, इसका परिणाम मुक्ति है और इसके विषय में केवल सच्चाई है और वह भी बिना किसी गल्ती के ।

परमेश्वर
संसार के लिये केवल एक जीवित और सच्चा परमेश्वर है । परमेश्वर की पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की त्रीमूर्ति के भिन्न-भिन्न लक्षण हैं, परन्तु उनकी प्रकृति, तत्त्व और अस्तित्व एक है ।

पिता परमेश्वर
पिता परमेश्वर अपने अनुग्रह के उद्देश्य के अनुसार अपनी सृष्टि, अपने जीवों और मानव इतिहास के प्रवाह पर सावधान दायित्व से राज करता है । परमेश्वर सचमुच में उनका पिता है जो यीशु मसीह में विश्वास लाकर परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं ।

परमेश्वर, एक बेटा
मसीह परमेश्वर का अनन्त पुत्र है । अपने यीशु मसीह के अवतार में आने के लिये वह पवित्र आत्मा की ओर से कुंवारी मरियम से उत्पन्न हुआ । उसने अपने निजि आज्ञाकारीपन और हमारे बदले सलीब पर जान देकर दिव्य कानून का मान रखा । उसने मनुष्य के लिये अपने पाप से मुक्ति पाने का मार्ग तैयार किया ।

परमेश्वर, एक पवित्र आत्मा
पवित्र आत्मा परमेश्वर की आत्मा है जो दिव्यता में सम्पूर्ण है । वह मसीह को मान देती है । वह मानव को उसके पापों का, उसमें समाई हुई पवित्रता का और उसके न्याय का अहसास दिलाती है । वह एक विश्वासी और एक कलीसिया को आराधना, evangelism और सेवा करने के लिये प्रबुद्ध करती है, और उन्हें सामर्थ देती है ।

मनुष्य
मनुष्य परमेश्वर की एक ख़ास रचना है जो उसके अपने रूप में बनी है । उसने अपनी इस रचना के लिये सबसे बढ़िया कार्य यह किया कि उसे एक पुरूष और स्त्री बनाया । अपनी स्वतंत्र इच्छा से मनुष्य ने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया और मानव जाति में पाप को ले आया । मानव प्रकृति की पवित्रता इस बात से प्रगट होती है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने रूप में बनाया और इस बात से कि यीशु मसीह मनुष्य के लिये मारा गया । इसलिये प्रत्येक जातिका प्रत्येक मनुष्य सम्पूर्ण गौरव और आदर और मसीही प्रेम के योग्य है ।

मुक्ति
मसीह के द्वारा दी गई मुक्ति में पूरी मानव जाति की ऋणमुक्ति है और जो यीशु मसीह को, जिसने अपने लहू से हर विश्वासी के लिये अनन्त ऋणमुक्ति प्राप्त की, अपना परमेश्वर और मुक्तिदाता स्वीकार करते हैं, उन्हें यह मुक्ति मुफ़्त में दी जाती है । अपनी भरपूर परिभाषा में मुक्ति का अर्थ है पुनर्जीवन, समर्थन, पवित्रकरण और महिमा ।

परमेश्वर का अनुगह का उद्देश्य
लोगों का चुनाव करना परमेश्वर का अनुग्रह का वह उद्देश्य है जिसके द्वारा वह पापियों को पुनर्जन्म, समर्थन, पवित्रकरण और अपनी महिमा के लिये चुनता है । सभी सच्चे विश्वासी अन्त तक परमेश्वर में स्थिर रहेंगे । जिन लोगों को परमेश्वर ने मसीह में स्वीकार किया है और अपनी आत्मा से पवित्र किया है, वे कभी उसके अनुग्रह से वंचित नहीं होंगे, बल्कि सदा उसके साथ रहेंगे ।

कलीसिया
प्रभु यीशु मसीह की नये नियम की कलीसिया बपतिस्मा लिये विश्वासियों की एक स्वतंत्र और स्थानिय सभा है जो अपने विश्वास में एक प्रण और सुसमाचार की संगत से बन्धे हैं । ये लोग सुसमाचार को धरती के अन्त तक ले जाना चाहते हैं । नये नियम में कलीसिया को मसीह की देह भी कहा गया है जिसमें हर उम्र का व्यक्ति, प्रत्येक कबीले और भाषा का बोलने वाला, हर प्रकार के और हर देश के लोग शामिल हैं ।

बपतिस्मा लेना और प्रभु भोज करना
एक मसीही बपतिस्मा लेने के लिये विश्वासियों को पानी में डुबकी लगानी होती है । यह परमेश्वर की आज्ञा मानने की वह कृति है जो एक विश्वासी का सलीब पर चढ़ाये जाने, दफ़नाये जाने और फिर जी उठने वाले मुक्तिदाता में विश्वास और एक विश्वासी की पाप की ओर मौत, उसके पुराने जीवन के दफ़नाये जाने और फिर मसीह यीशु में जी उठने का निशान है ।

प्रभु भोज परमेश्वर की आज्ञा मानने की वह कृति है जिसमें सदस्य अपने मुक्तिदाता की मृत्यु और उसके जी उठने के समय को याद करते हैं ।

परमेश्वर का दिन
सप्ताह का पहला दिन परमेश्वर का दिन है । यह मसीह का मुर्दों में से जी उठने का स्मरण करता है । और इसमें आराधना करना और आत्मिक भक्ति मिली होनी चाहिये ।

अन्तिम समय की बातें
परमेश्वर अपने समय और अपनी विधि के अनुसार इस संसार का अन्त करेगा । यीशु मसीह स्वंय और सबके सामने लौटेगा...मुर्दे जी उठेंगे और मसीह सब लोगों का पवित्रता से न्याय करेगा । अपवित्र लोग सदा के लिये नर्क में भेजे जायेंगे...पवित्र लोग अपनी भेंट पायेंगे और सदा के लिये परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहेंगे ।

Evangelism और मिशन के काम
यह मसीह के पीछे चलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति और यीशु मसीह की प्रत्येक कलीसिया का धर्म और विशेषाधिकार है कि सभी देशों के लोगों को मसीह का अनुयायी बनाया जाये...और अपने मुंह से लगातार ऐसी गवाही देकर लोगों को मसीह के लिये जीता जाये जो एक मसीही जीवन और ऐसी विधियों का नमूना है जो सुसमाचार के अनुकूल हैं ।

शिक्षा
यीशु मसीह में हमारे सारे ज्ञान और बद्धि के खज़ाने हैं । इसलिये मसीह में सम्पूर्ण शिक्षा पाना हमारी मसीही पैतृक सम्पत्ति का एक भाग है । मसीह के राज्य की शिक्षा का कारण है कि हम मिशन के कामों में हाथ बंटायें और लोगों पर दयालु होयें । शास्त्रीय स्वतंत्रता और शास्त्रीय ज़िम्मेदारी में उचित संतुलन होना चाहिये । एक मसीही विद्यालय में अध्यापक की स्वतंत्रता पर मसीह का उत्तम होना, पवित्र वचन के अधिकार और वह ख़ास उद्देश्य जिसके लिये वह

विद्यालय स्थापित किया गया है, ये सब मिलकर सीमायें बान्धते हैं ।

सेवा करना और दान देना

हमारी प्रत्येक बरकत, चाहे शारीरिक हो या आत्मिक, परमेश्वर की ओर से है । जो कुछ भी हमारे पास है उसके लिये हम परमेश्वर के कर्ज़दार हैं । मसीहियों पर दुनिया का एक आत्मिक कर्ज़ा भी है और उनकी निजि सम्पत्ति पर उसे दूसरों की सेवा में लगाने का एक बन्धन भी । इसलिये ये उनका धर्म और कर्त्तव्य है कि वे अपने समय, कुशलता और सम्पत्ति से परमेश्वर की सेवा करें ।

सहयोग

मसीही लोगों को किसी ऐसे संघ या कनवैनशन का संगठन करना चाहिये जिससे वे परमेश्वर के राज्य के लिये ज़्यादा से ज़्यादा सहोग प्राप्त कर सकें...ऐसी संस्थाओं का एक दूसरे या दूसरी कलीसियाओं पर कोई अधिकार नहीं होता । भिन्न-भिन्न मसीही का एक दूसरे की सहायता करना बहुत अच्छी बात है ।

एक मसीही और समाज

प्रत्येक मसीही का यह फर्ज़ है कि वह अपने जीवन और मानव समाज में मसीह की इच्छा को माने...इस मसीही भाव में, मसीहियों को जातिवाद, हर प्रकार के लालच, स्वार्थ और पाप का विरोध करना चाहिये ।

धार्मिक स्वतंत्रता

कलीसिया और सरकार को अलग अलग होना चाहिये । यह प्रत्येक सरकार की ज़िम्मेदारी है कि वह किसी कलीसिया की उसके आत्मिक उद्देश्यों को पूरा करने में पूरी रक्षा करे । यही मसीही आदर्श है कि एक स्वतंत्र देश में या सरकार के शासन में एक कलीसिया भी स्वतंत्र हो ।

परिवार

परमेश्वर ने मानव समाज की नींव परिवार पर रखी है । विवाह एक पुरूष और स्त्री के बीच जीवन भर साथ निभाने का वचन है...परमेश्वर के सामने पति और पत्नी दोनों बराबर हैं, क्योंकि दोनों को परमेश्वर के अपने रूप में बनाया गया है । विवाह का रिश्ता हमें यह दिखाता है कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ कैसा रिश्ता रखता है...बच्चे गर्भधारण के समय से ही हमारे लिये परमेश्वर की एक बरकत और उसकी दी हुई पैतृक सम्पत्ति हैं ।